प्रतिरक्षा संबंध

समान सामरिक भविष्य

टीएसजीटी. कीथ ब्राउन

अमेरिका-भारत के प्रतिरक्षा संबंधों के निरंतर विस्तृत हो रहे शब्दकोश में महत्वपूर्ण शब्द ''अंतर-परिचालनीयता'' है। एक ओर जहां यह सैन्य सहयोग के क्षेत्र में अधिक निकटता से काम करने की दोनों देशों की साझा आकांक्षा का प्रतीक है, वहीं यह ऐसे भविष्य की तस्वीर भी तैयार करता है, जिसमें नई सदी की चुनौतियों से निबटने के लिए दोनों देश सामरिक सिद्धांतों और अभियानों की साझीदारी करते हैं।

11 सितंबर, 2001 को अमेरिका पर हुए आतंकवादी हमलों पर भारत की त्वरित प्रतिक्रिया और आंतकवाद के खिलाफ जंग को उसके बिलाशर्त समर्थन ने अमेरिका-भारत सैन्य संबंधों में बदलाव तेज कर दिया। हालांकि इस दिशा में शुरुआती कदम कुछ महीने पहले उसी समय उठा लिए गए थे, जब भारत ने मई 2001 में बुश प्रशासन के नेशनल मिसाइल डिफेंस प्रोग्राम का समर्थन किया था। सितंबर 2001 में भारत के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध हटने से अमेरिका व भारत को राष्ट्रीय सुरक्षा के साझा लक्ष्यों की पहचान करने और सैन्य संबंधों को नया आवेग देने में मदद मिली।

बढ़ते द्विपक्षीय प्रतिरक्षा संबंधों का उद्देश्य कार्यक्षमता और विश्वास बढ़ाना तथा ऊर्जा आपूर्ति व समुद्री मार्गों की सुरक्षा, शांति अभियान चलाना एवं आतंकवाद से लड़ने जैसे सुरक्षा के बहुपक्षीय मुद्दों से संयुक्त रूप से निबटना है। इन संबंधों के मजबूत होने से दोनों देशों के प्रतिरक्षा तंत्र को काफी फायदा होगा। जाहिर है, अंतर-उपयोगी प्रक्रियाओं, संचार और सिद्धांतों का विकास परिचय, समझ और भरोसा बहाली, परस्पर हित के क्षेत्रों पर ध्यान देने तथा कर्मचारियों के पेशेवर विकास में इज़ाफा करने से ही संभव है।

नतीजतन, सेनाओं के बीच (मिल-टु-मिल) संबंधों में तेजी से विकास द्विपक्षीय संबंधों में बदलाव की प्रक्रिया का सबसे अधिक नुमायां पहलू रहा है। यह सैन्य प्रौद्योगिकी की खरीद और सहयोग के साथ ही द्विपक्षीय अभ्यासों, गोष्ठियों, सैनिकों के आदान-प्रदान, उच्च-स्तरीय और इकाइयों के दौरों, अधिकारियों और इकाइयों के आदान-प्रदान में वृद्धि से जाहिर है। इस संबंध को बढ़ावा देने पर अमेरिका का जोर देने का उद्देश्य एडमिरल डेनिस ब्लेयर (पैसिफिक कमान के पूर्व कमांडर) के इस ऐलान से स्पष्ट हुआ, ''हमारा मानना है कि अमेरिका-भारत के बीच मजबूत प्रतिरक्षा संबंध, जो हमारे द्विपक्षीय संबंधों के इतिहास में अप्रत्याशित हैं, एशिया में शांति, सुरक्षा और स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हम भारत के साथ अपने संबंध उभरती विश्व शक्ति के रूप में भारत के आविर्भाव के आधार पर विकसित करेंगे।''

हालांकि अमेरिका-भारत प्रतिरक्षा संबंधों का आधार 1995 का एग्रीड मिनट ऑफ डिफेंस रिलेशंस है पर दोनों देशों के बीच संबंधों का दायरा उस समय सोची गई संभावनाओं से कहीं आगे निकल गया है। तब से दोनों देशों की सेनाओं ने सैन्य अभियानों के विभिन्न पहलुओं और सिद्धांतों के मामले में रिश्ते बनाते हुए एक साथ काम करने का गंभीर काम शुरू कर दिया है। इसका लक्ष्य साधारण है। दोनों देश जितना अधिक साझा युद्धाभ्यास करेंगे, उतना ही अधिक एक-दूसरे की व्यवस्थाओं और विधियों के बारे में उनकी समझ बढ़ेगी और मौका पड़ने पर वास्तविक परिस्थितियों में एक साथ काम करना उनके लिए

सेना के तीनों अंगों के संयुक्त युद्धाभ्यास और अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने की वजह से अमेरिका-भारत के सैन्य संबंध नए मुकाम पर पहुंच गए हैं

संयुक्त युद्धाभ्यास

रक्षा संबंध आश्चर्यजनक रूप से बहुत तेजी से प्रगाढ़ हुए

फरवरी 2001: अमेरिका के 7वें बेड़े के कमांडर, वाइस-एडमिरल मेत्ज़गर व गाइडेड मिसाइल वाहक *यूएसएस काउपेंस* ने मुंबई में अंतरराष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू में अमेरिका की नुमाइंदगी की।

अक्तूबर 2001: अफगानिस्तान में ऑपरेशन एंड्यूरिंग फ्रीडम के दौरान अमेरिकी विमानों और युद्धपोतों में भारत में नियमित तौर पर ईंधन भरा गया।

नवंबर 2001-2003: दो विमान वाहकों समेत अमेरिकी नौसेना के 14 जहाज भारत आए।

अप्रैल और सितंबर 2002: ऑपरेशन एंड्यूरिंग फ्रीडम में *आइएनएस सुकन्या* और *आइएनएस शारदा* ने मलक्का जलडमरू मध्य में निगरानी तथा अमेरिकी जहाजों को एस्कॉर्ट करने के लिए *यूएसएस काउपेंस* की जगह ली।

मई 2002: अमेरिका और भारत की स्पेशल ऑपरेशंस फोर्सेज का आगरा में बैलेंस इरोकुइस अभ्यास। इसका उद्देश्य विशेष अभियानों और रात-दिन के हवाई हमलों में परस्पर विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करना था।

सितंबर 2002: अमेरिका के अलास्का में 501वीं पैराशूट इनफैंट्री रेजीमेंट ने भारत के 50वीं इंडिपेंडेंट पैराशूट ब्रिगेड के 80 जवानों का स्वागत किया। वे पहले लाइव फायरिंग, ''जेरोनिमो थ्रस्ट'' में भाग लेने आईएएफ के आईएल-76 से उड़ान भरकर गए थे।

आसान होगा। साझा अभियानों से सैन्य-कर्मियों के पेशेवर विकास के अलावा सिद्धांतों की परस्पर समझ बढ़ाने में मदद मिलेगी। इससे लंबे अरसे में दोनों सेनाओं को समान सामरिक लक्ष्य के लिए काम करने में आसानी होगी।

संबंध प्रगाढ़ करने में एक और महत्वपूर्ण तत्व आईमेट (इंटरनेशनल मिलिटरी एजूकेशन एंड ट्रेनिंग) कार्यक्रम है, जिसके तहत अमेरिका भारतीय सैन्य-कर्मियों को अमेरिकी सेना के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिरकत के लिए भेजता है। इस नए संबंध में सुधार का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2002 में इस कार्यक्रम का बजट 4.6 करोड़ रु. (10 लाख डॉलर) तक पहुंच गया, जिससे 37 भारतीय अधिकारियों को अमेरिका के सैन्य ठिकानों पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में शामिल होने का मौका मिला। सन् 2004 में इस बजट के 5.5 करोड़ रु. (12 लाख डॉलर) तक बढ़ने की उम्मीद है। इसके अलावा, सन् 2002-2003 के दौरान भारतीय और अमेरिकी अधिकारियों ने सेना से संबंधित 53 सम्मेलनों में हिस्सा लिया।

साभारः पैकोम

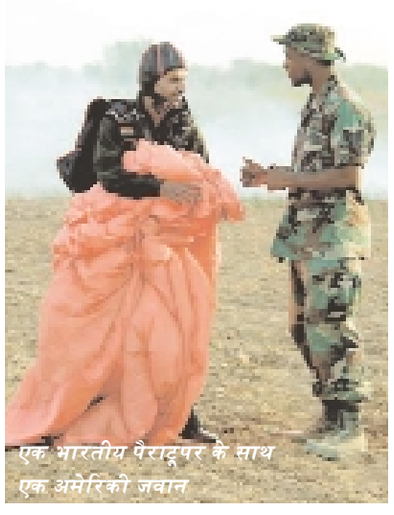

एक भारतीय पैराट्रूपर के साथ एक अमेरिकी जवान

सेना के तीनों अंग निरंतर विस्तृत हो रहे युद्धाभ्यासों में हिस्सा ले रहे हैं, उनमें से कई युद्धाभ्यासों में सेना के विभिन्न अंग शामिल होते हैं। सन् 2002 में आगरा में युद्धाभ्यास के दौरान भारतीय और अमेरिकी स्पेशल फोर्सेज के पैराट्रूपरों ने एक-दूसरे की फॉर्मेशन फ्लाइंग तकनीक जानने और जमीन पर गिराए जाने वाली सहायक सामग्री का समन्वय करने के लिए भारतीय और अमेरिकी वायु सेना के जहाजों से छलांग लगाई।

मई की चिलचिलाती गर्मी में भारतीय वायु सेना (आईएएफ) और अमेरिकी वायु सेना (यूएसएएफ) अंतर-परिचालनीयता की यात्रा पर निकल पड़ीं। यूएसएएफ के 353वें स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के एअरमैन फर्स्ट क्लास मितुल पटेल को अमेरिका-भारत के बीच अब तक के सबसे बड़े संयुक्त हवाई युद्धाभ्यास में हिस्सा लेने के लिए काडेना, ओकिनावा स्थित अमेरिकी वायु सेना बेस से आगरा में भारतीय वायु सेना अड्डे पर भेजा गया। आईएएफ के साथ युद्धाभ्यास में एमसी-130 दागने का जिम्मा गुजरात में जन्मे अमेरिकी दल के इस 23 वर्षीय प्रमुख को सौंपा गया था।

इसी बीच, अप्रैल 2002 में ऑपरेशन एंड्यूरिंग फ्रीडम के दौरान भारतीय नौसेना के *शारदा* और *सुकन्या पोत* ने मलक्का जलडमरू मध्य में जहाजों को एस्कॉर्ट करने और उन्हें आतंकवादी हमलों तथा समुद्री लुटेरों से बचाने के लिए तैनात *यूएसएस*

साभारः पैकोम

आगरा में 2003 में स्पेशल फोर्सेज का संयुक्त युद्धाभ्यास

काउपेंस का साथ दिया। *यूएसएस काउपेंस* के कमांडिंग ऑफिसर कैप्टन पॉल एस. होम्स ने कहा कि भारतीय नौसेना के साथ काम करके पुरानी दोस्ती फिर जीवित हो उठी। महज 14 महीने पहले फरवरी 2001 में *यूएसएस काउपेंस* ने मुंबई में इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू में अमेरिका का प्रतिनिधित्व किया था। वहां *काउपेंस* ने गुजरात के लिए, जो हाल ही में भूकंप से तबाह हो गया था, 36 लाख रु. (80,000 डॉलर) की राहत सामग्री दी थी। जैसा कि कैप्टन होम्स कहते हैं, ''फ्लीट रिव्यू के आखिर में एक साक्षात्कार के दौरान मुझसे पूछा गया कि फ्लीट रिव्यू के परिणामस्वरूप अमेरिका-भारत के सबंधों में कितनी तब्दीली आएगी। मैंने कहा कि हम इंतजार करें और देखें कि हमने दोस्ती के जो बीज बोए हैं, उनसे क्या निकलता है। किसने सोचा होगा कि 14 महीने बाद ही भारतीय नौसेना का जहाज एक असली अभियान के दौरान अमेरिकी नौसेना के एक जहाज की सहायता करेगा और वह जहाज *काउपेंस* होगा।''

पिछले कुछ वर्षों से दोनों नौसेनाओं ने अरब सागर में ''मालाबार'' युद्धाभ्यास करने के साथ ही कई खोज एवं बचाव अभियान के अभ्यास भी किए हैं। अब इस तरह की गतिविधियां हर साल आयोजित की जाती हैं। इन अभियानों के तहत दोनों देशों के जहाज और हेलीकॉप्टर संदिग्ध जहाजों को रोकते हैं, पनडुब्बी-निरोधी युद्धकलाओं का प्रयोग करते हैं और उड़ान के पेचीदा ऑपरेशनों को पूरा करते हैं। धैर्य और क्षमता की परख करते हुए ये युद्धाभ्यास एक-दूसरे की नौसेनाओं के काम करने

9/11 के हमलों पर भारत की त्वरित प्रतिक्रिया से दोनों देशों के सैन्य संबंधों में तेजी से बदलाव आया

के ढंग की झलक देते हैं। अक्तूबर 2002 में पहले युद्धाभ्यास में अमेरिकी नौसेना के टाइकनडेरोगा-श्रेणी के एक गाइडेड मिसाइल क्रूजर *यूएसएस चांसलर्सविले* और स्प्रूएंस-श्रेणी के *यूएसएस पॉल एफ. फॉस्टर* के मुकाबले भारतीय नौसेना के पश्चिमी बेड़े ने डेल्ही-श्रेणी के विध्वंसक *आईएनएस डेल्ही,* गोदावरी-श्रेणी के फ्रिगेट *आईएनएस गोमती* और शिशुमार-श्रेणी के *आईएनएस शंकुल* और टैंकर *आदित्य* को उतारा था। इसके अलावा इसमें दोनों नौसेनाओं के टोही विमानों ने भी भाग लिया। अमेरिका-भारत के बीच यह सबसे बड़ा युद्धाभ्यास सन् 2002 और फिर सन् 2003 में हुआ।

फरवरी 2004 में 1963 के बाद पहली बार इसमें युद्धक विमान शामिल हुए। डिसिमिलर एअर कॉम्बैट ट्रेनिंग (डीएसीटी) में भाग लेने के लिए अमेरिका के अलास्का स्थित एलमेनडॉर्फ एअर फोर्स बेस के 19वें फाइटर स्क्वाड्रन के आठ एफ-15सी विमान उड़ान भरकर ग्वालियर के भारतीय वायु सेना स्टेशन पहुंचे। आईएएफ ने इस युद्धाभ्यास में जगुआर, मिग 21 बाइसन, मिराज 2000 और सु-30 के विमानों को शामिल किया। अपनी किस्म के एक और पहले युद्धाभ्यास के तहत भारत सन् 2004 की गर्मियों में पहली बार अपने लड़ाकू विमानों को अपने क्षेत्र से बाहर सबसे बड़े युद्धाभ्यास के लिए भेजेगा। तब आईएएफ अलास्का में बहुराष्ट्रीय कोप थंडर 2004 में भाग लेगी।

स्पेशल फोर्सेज की कार्रवाइयां अक्सर वर्गीकृत सूचना की तरह गुप्त होती हैं, पर वे अंतर-परिचालनीयता की उपयोगिता भी दर्शाती हैं, खासकर तब जबकि दोनों सेनाएं आतंकवादियों और छापामारों से निबटने तथा गुप्त सैनिक संघर्ष के लिए मुस्तैद हो रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र के साझा युद्धाभ्यासों में हेलीकॉप्टरों के अभियान, आतंकवाद विरोधी प्रशिक्षण, पहाड़ों पर संघर्ष, नजदीक से लड़ाई और जंगल में संग्राम शामिल हैं। कई लोगों का मानना है कि युद्ध के नए युग में विशेष कार्रवाइयों के लिए ज्यादा दक्षता की जरूरत होगी, जैसा कि अफगानिस्तान और इराक में जाहिर हुआ है। स्पेशल फोर्सेज के पिछले तीन युद्धाभ्यासों से इसकी शुरुआत हो गई है। इनमें से दो युद्धाभ्यास भारत में और एक गुआम में हुआ है।

कर्नल स्टीवन सबोतो

मिजोरम के फैनुअम गांव में एक अमेरिकी अधिकारी के साथ भारतीय जवान। वहां उन्होंने ग्रामीणों के लिए निर्माण की चार परियोजनाओं पर एक साथ काम किया

सैन्य-कर्मियों के आदान-प्रदान से सैन्य संबंधों में मानवीय तत्व जुड़ता है। हैदराबाद के बाहर भारतीय वायु सेना अकादमी में यूएसएएफ के एक्सचेंज फ्लाइट इंस्ट्रक्टर कैप्टन जैसन ब्राइटमैन, जब भारत में दो साल बिताकर घर के लिए उड़ान भरेंगे तो उनके पास आईएएफ के अनुभव के रूप में मिली थाती होगी और यूएसएएफ के बारे में आईएएफ की समझ और बढ़ेगी। उनके भारतीय समकक्ष फ्लाइट लेफ्टिनेंट पी.ए. शाह अमेरिका के मिसिसिपी में कोलंबस एअर फोर्स बेस पर पहले फ्लाइंग ट्रेनिंग स्क्वाड्रन के साथ हैं। अमेरिका में तीन साल गुजारने के बाद उनके पास भी ऐसी ही कहानियां होंगी।

भारतीय और अमेरिकी सेना के नागरिक मामलों के कर्मचारियों ने भी जेसीईटी बैलेंस इरोकुइस 2003 के दौरान मिजोरम के फैनुअम गांव में समुदाय संबंधी परियोजनाओं में सहयोग किया। दोनों देशों की सेनाओं ने स्थानीय समुदाय से संबंध

2003 में बैलेंस इरोकुइस के दौरान दोनों देशों के जवान

साभारः पैकोम

बनाते हुए एक पहाड़ी रास्ते को वाहनों के आवागमन योग्य बनाया, एक फुटबॉल मैदान को समतल किया, सामुदायिक केंद्र के पार्क को ठीक किया और एक प्राथमिक विद्यालय से सटा खेलकूद का मैदान बनाया।

यह आदान-प्रदान नीचे से लेकर चोटी के अधिकारियों तक पहुंच गया है। भारतीय सेना के तीनों अंगों के प्रमुखों ने 2002 में अमेरिका का दौरा किया, वायु सेना प्रमुख एअर चीफ मार्शल एस. कृष्णस्वामी ने सन् 2003 में वाशिंगटन डी.सी. में ग्लोबल एअर चीफ्स कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के चेयरमैन जनरल मायर्स ने जुलाई 2003 में भारत का दौरा किया और अमेरिकी थल सेना के प्रमुख ने सन् 2003 के शुरू में भारत का दौरा किया, जबकि पैसिफिक कमान के कमांडर पिछले कुछ वर्षों में भारत का तीन बार दौरा कर चुके हैं। नैवल ऑपरेशंस के चीफ ने अक्तूबर 2003 में भारत का दौरा किया और चीफ ऑफ स्टाफ एअर फोर्स सन् 2004 में किसी समय भारत का दौरा करने वाले हैं। भारतीय थल सेना के प्रमुख जनरल एन.सी. विज ने मार्च 2004 में अमेरिका का दौरा किया।

अंतर-परिचालनीयता के लिए एक और महत्वपूर्ण तथ्य उपकरणों की अनुरूपता के स्तर को हासिल करना है, जिससे एक देश दूसरे देश से ''बात'' करने में सक्षम होता है। दोनों देश जितना एक साथ अधिक युद्धाभ्यास करेंगे, भारत को माकूल उपकरण, संचार और प्रौद्योगिकी मुहैया कराना उतना ही अधिक तर्कसंगत हो जाएगा। भारतीय सेना की एफएमएस (फॉरेन मिलिटरी सेल) के जरिए अमेरिकी उपकरण खरीदने की इच्छा और अमेरिका की भारत को अत्याधुनिक उपकरण बेचने की मंशा एक सुखद संयोग है। अमेरिकी और भारतीय सेनाओं के बीच सुधरती अंतर-

संयुक्त युद्धाभ्यास

सितं.-अक्तू. 2002: अरब सागर में नौसेना के मालाबार युद्धाभ्यास में सतह पर, सतह के नीचे और हवाई युद्ध शामिल था। अमेरिकी नौसेना के गाइडेड मिसाइल पोत *यूएसएस चांसलर्सविले, यूएसएस पॉल एफ. फॉस्टर* के मुकाबले भारतीय नौसेना के पश्चिमी बेड़े ने *आईएनएस डेल्ही, आईएनएस गोमती* और *आईएनएस शंकुल* और टैंकर *आदित्य* को उतारा।

अक्तूबर 2002: अंतर-

साभारः पैकोम

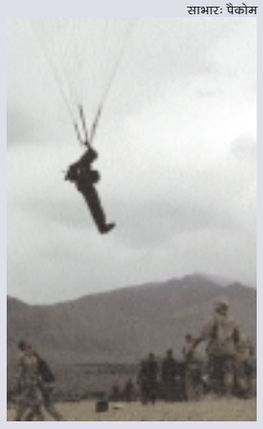

परिचालनीयता का आधार तैयार करने के लिए कोप इंडिया-02 युद्धाभ्यास किया। यूएसएएफ के जवानों ने आईएल-76 और एएन-32 में बैठकर आईएएफ की उड़ान प्रक्रियाओं और भारतीय सेना के पैराट्रूपरों तथा भारी उपकरणों को उतारने की विधि देखी। आईएएफ और थल सेना के जवानों ने अमेरिकी विमानों में बैठकर उनकी विधियों को देखा। भारतीय वायु सेना व आर्मी ने सी-130 हरक्यूलिस से सैनिक और सामान उतारे जाते देखा।

संयुक्त युद्धाभ्यास

सितंबर 2003: अमेरिकी और भारत के स्पेशल ऑपरेशंस फोर्सेज ने लेह में तीन सप्ताह तक पहाड़ी युद्धकला का अभ्यास किया।

अक्तूबर 2003: मालाबार युद्धाभ्यास में विमानवाहक युद्धपोत, पनडुब्बियां और पी-3 ओरियन

साभार: पैकोम

शामिल। संदिग्ध पोतों को घेरने का अभ्यास।

फरवरी 2004: 1963 के बाद पहली बार अमेरिका के आठ एफ-15सी विमानों, जो एलमेनडॉर्फ एअर फोर्स बेस, अलास्का से आए और भारतीय वायु सेना के जगुआर, मिग 21 बाइसन, मिराज 2000 और सु-30 के विमानों ने आईएएफ स्टेशन ग्वालियर में हुए कोप इंडिया 2004 में आक्रामक व रक्षात्मक भूमिकाएं निभाते हुए डिसिमिलर एअर कॉम्बैट ट्रेनिंग (डीएसीटी) पूरी की।

मार्च 2004: अमेरिकी और भारतीय सैनिकों ने मिजोरम के काउंटर इनसर्जेंसी जंगल वारफेयर सेंटर (सीआईजेडब्लू) में संयुक्त युद्धाभ्यास किया।

परिचालनीयता अमेरिका की भारत को प्रतिरक्षा प्रौद्योगिकी और उपकरण बेचने में सहायक कई प्रेरणाओं में से एक है। नए प्रतिरक्षा संबंधों का यह भी मतलब है कि अतीत में राजनैतिक संबंध टूटने से भारत को अमेरिकी प्रतिरक्षा उपकरणों की बिक्री बाधित होने की बात पुरानी हो गई। प्रतिबंध हटाए जाने के साथ ही भारत की केवल उन्हीं बड़ी प्रतिरक्षा जरूरतों को कांग्रेस की मंजूरी दिलाने की जरूरत है, जिनका मूल्य 63 करोड़ रु. (1.4 करोड़ डॉलर) से ऊपर है। इस तरह भारत जापान और दक्षिण कोरिया जैसे अमेरिका के महत्वपूर्ण सहयोगी देशों की श्रेणी में पहुंच गया है।

साभार: पैकोम

एक संयुक्त युद्धाभ्यास की निगरानी

अमेरिका सन् 2002 में भारतीय थल सेना को 12 एएन-टीपीक्यू/37 फायरफाइंडर काउंटर बैटरी रडार बेचने के लिए राजी हो गया। जुलाई 2003 में दो अंतरिम रडार पहुंच गए और उन्हें लगा भी दिया गया। वे एफएमएस के तहत 855 करोड़ रु. (19 करोड़ डॉलर) के बिक्री समझौते का अंग हैं। यह मोबाइल रडार सिस्टम कई रडार तकनीकों व कंप्यूटर से आर्टिलरी और रॉकेट हथियारों की पहचान करके उनकी स्थिति बताते हैं, ताकि उन्हें फौरन जवाबी गोलाबारी से रोका जा सके। इन रडार प्रणालियों के लिए भारतीय सेना के ऑपरेटरों व कर्मियों का प्रशिक्षण सन् 2003 के आरंभ में कैलिफोर्निया में शुरू हुआ।

दूसरे महत्वपूर्ण सौदे पर बातचीत चल रही है। यह पी-3 ओरियन नौसेना टोही विमान के लिए है। नौसेना का यह विमान भारतीय नौसेना की दूर तक निगरानी क्षमता बढ़ाने के लिए जरूरी है। अमेरिकी अधिकारी इसे ''3सी-प्लस'' करार देते हैं (यानी भारत को जो संस्करण बेचा जाएगा वह सेंसर और कंप्यूटरीकृत कमान और नियंत्रण और हथियार प्रणालियों समेत अत्याधुनिक एवियनॉक्सि से लैस होगा)। अधिकारी इसे ''आक्रामक क्षमता वाला नौसेना गश्ती विमान'' कहते हैं। भारत गहराई में उतरकर बचाव कार्य करने वाली पोत प्रणाली भी खरीदेगा। इस बीच लाइट कॉम्बैट एअरक्राफ्ट (एलसीए) के लिए जीई-404 इंजन भारत में पहले ही पहुंच गए हैं।

अमेरिका ने सी हॉक हेलीकॉप्टरों के साथ ही पेरी-क्लास के फ्रिगेट भारतीय नौसेना को उपलब्ध कराने की अपनी मंशा का भी संकेत दिया है। भारत अपनी विशेष सेनाओं की आतंकवाद विरोधी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए स्पेशल ऑपरेटिंग फोर्सेज के 202 करोड़ रु.(2.9 करोड़ डॉलर) के बेमिसाल उपकरण खरीदेगा। वह रासायनिक और जैविक सुरक्षा के उपकरण भी खरीद सकता है। भारत की विशेष सेनाओं ने संयुक्त युद्धाभ्यास में इनमें से ज्यादातर उपकरणों का परीक्षण किया और यह स्वाभाविक ही

भारतीय सेना के कर्मचारी अमेरिकी जीपीएस प्रणाली की नुमाइश देखते हुए

साभार: पैकोम

है कि संयुक्त कार्रवाई के लिए भारत को अमेरिका के अनुरूप उपकरण और प्रौद्योगिकी की जरूरत होगी।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सीमा सुरक्षा चिंता का महत्वपूर्ण क्षेत्र है और भारत समग्र सीमा प्रबंधन प्रणाली हासिल करना चाहता है। एक भारतीय दल ने उन सेंसर प्रणालियों का मुआयना करने के लिए न्यू मेक्सिको की सैंडिया लैबोरेटरीज का दौरा किया, जिन्हें अमेरिका मेक्सिको सीमा पर प्रयोग करता है। भारतीय थल सेना अपने विशेषज्ञों को सैंडिया भेजने पर विचार कर रही है, जबकि अमेरिका भारत की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष सेंसर बेचने के लिए तैयार है।

प्रतिरक्षा संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू उसकी ''स्पिगॉट'' (ऑन-अगेन-ऑफ-अगेन—कभी बंद तो कभी खुली) विशेषता है, जिसकी वजह से सहयोग और बिक्री के मामले में एक प्रतिरक्षा साझीदार के रूप में अमेरिका की विश्वसनीयता पर भारत आशंकित हुआ है। अमेरिका के रक्षा अवर मंत्री डगलस जे. फीथ कहते हैं कि अमेरिका भारत जैसे सहयोगियों के साथ असहमति जताने के लिए प्रतिरक्षा संबंधों का इस्तेमाल नहीं करेगा। ''समान सामरिक हितों की गहरी समझ वाले बहुआयामी संबंधों में इसकी संभावना बहुत कम है कि इस तरह की बिक्री को मतभेद दूर करने के उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा।'' भारत में अमेरिका के पूर्व राजदूत रॉबर्ट ब्लैकविल इसे और जोरदार अंदाज में बयान करते हैं, ''अमेरिका भारत को प्रतिरक्षा सामान मुहैया कराने वाला विश्वसनीय देश होगा क्योंकि मजबूत, सक्षम व प्रभावी भारतीय सेना अमेरिका के राष्ट्रीय हित में है।''

भारत के इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ (आईडीएस) की स्थापना के साथ ही अमेरिकी ज्वाइंट स्टाफ का दफ्तर ऑफिस

संयुक्त प्रतिरक्षा सहयोग

2002-2003: जेसीईटी (ज्वाइंट कंबाइंड एक्सरसाइज ट्रेनिंग) इरोकुइस श्रृंखला में तीन एसओएफ युद्धाभ्यास हुए। दो भारत में एक गुआम में हुआ। दूसरे युद्धाभ्यासों में हैं:

- पैसिफिक एरिया स्पेशल ऑपरेशंस कॉन्फ्रेंस। (फरवरी 2003)
- स्मॉल यूनिट टैक्टिस, पैरा ड्रॉप्स। (मई 2002)
- क्लोज क्वार्टर कॉम्बैट (मई 2002), फोर्ट लेविस, वाशिंगटन।
- लाइव फायर एक्सरसाइज, (अप्रैल 2003) भारत।
- काउंटर-टेररिज्म (मई 2003) भारत।
- प्लाटून एक्सरसाइज (जून 2003) गुआम।
- क्लोज क्वार्टर कॉम्बैट (अगस्त 2002), फोर्ट लेविस, वाशिंगटन।

मई-जुलाई 2003: आईएमए के साथ यू.एस. मिलिटरी एकेडमी का एक्सचेंज।

जून 2003: अधिक ऊंचाई के चिकित्सीय मामलों के विशेषज्ञ का कश्मीर में एक्सचेंज।

अगस्त 2003: सेना के खुफिया मामलों के विशेषज्ञों का गोवा में एक्सचेंज। अमेरिका और भारतीय प्रतिरक्षा खुफिया एजेंसियों की 2002-03 में बैठक।

यूएसएएफ ने भारत में अपना इंस्ट्रक्टर पाइलट एक्सचेंज कार्यक्रम शुरू किया।

ऑफ नेट असेसमेंट तथा भारतीय राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विश्वविद्यालय खड़ा करने में आईडीएस की मदद के लिए महत्वपूर्ण सूचनाओं की साझीदारी कर रहा है। ज्वाइंट स्टाफ की दो दौर की वार्ता हो चुकी है, जिससे विचारों के आदान-प्रदान की राह खुली और सेना के तीनों अंगों तथा सैन्य योजना के मामले में सहयोग के लिए आईडीएस के कर्मियों ने अमेरिकी संस्थाओं का सुनियोजित दौरा किया। यह अमेरिका-भारत की अंतर-परिचालनीयता का महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि अमेरिकी सेनाएं ज्यादातर संयुक्त कमान में ही काम करती हैं, इसका सबसे ताजा उदाहरण इराक में अमेरिकी कार्रवाई है। भारतीय आईडीएस पैकोम के ज्वाइंट इंटर-एजेंसी कोऑर्डिनेशन ग्रुप फॉर कॉम्बैटिंग टेररिज्म से भी बातचीत कर रहा है। इन संबंधों में बदलाव के मूल में भारतीय सेना के तीनों अंगों में एकता की हद तक अनुरूपता लाना है। अमेरिका ने आईडीएस को बजट और अधिग्रहण, कमान से लेकर नियंत्रण तक के मामलों में संयुक्त रणनीतियां तैयार करने में सहायता के लिए प्रतिरक्षा नियोजन आदान-प्रदान प्रस्तावित किया है। प्रतिरक्षा नियोजन का यही भविष्य है, जिसमें अलग-अलग सेनाओं को एक अंतर-आनुशासनिक प्रणाली के तहत मिला दिया जाएगा।

संयुक्त युद्धाभ्यास से सहयोग का आधार तैयार हुआ

प्रकाश सिंह/एएफपी फोटो

दोनों देशों के प्रतिरक्षा अनुसंधान समुदायों को करीब लाने के लिए पेंटागन के मुख्य थिंक टैंक, ऑफिस ऑफ नेट असेसमेंट व उसके भारतीय समकक्ष के बीच नए संबंध बन रहे हैं।

इसी प्रकार, प्रक्षेपास्त्र प्रतिरक्षा प्रणाली पर दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय वार्ता हो रही है। भारतीय विशेषज्ञों ने जून 2002 में कोलोरैडो में एक प्रक्षेपास्त्र प्रतिरक्षा अभ्यास में हिस्सा लिया। भारतीय प्रतिरक्षा अधिकारियों ने खासकर भावी प्रक्षेपास्त्र प्रतिरक्षा कार्यक्रमों में भाग लेने के बारे में बात करने के लिए पिछले दो साल में अमेरिका के दौरे किए हैं। 2004 के शुरू में नई दिल्ली में एक प्रक्षेपास्त्र प्रतिरक्षा कार्यशाला आयोजित की गई और भारत को क्योटो तथा बर्लिन में बहुपक्षीय बीएमडी सम्मेलनों में भाग लेने तथा 2004 में यूएस रोविंग सैंड्स अभ्यास देखने के लिए न्यौता दिया है।

शांति अभियान ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारतीय अनुभव में कई महत्वपूर्ण सबक हैं, क्योंकि भारत संयुक्त राष्ट्र के कई शांति अभियानों में हिस्सा ले चुका है। सन् 2003 के शुरू में नई दिल्ली स्थित यूनाइटेड सर्विसेज इंस्टीट्यूशन में अमेरिका-भारत के संयुक्त शांति अभियान का अभ्यास, ''शांतिपथ'' आयोजित किया गया था। यह अभ्यास आधुनिक कंप्यूटर वार-

कोच्चि के पास समुद्र में मालाबार युद्धाभ्यास के दौरान यूएसएस चांसलर्सविले

भास्कर पॉल/इंडिया टुडे

गेमिंग सिमुलेशन से प्रेरित था। इसमें कई क्षेत्रीय देश शामिल थे और दक्षिण एशिया में यह अपनी तरह का सबसे बड़ा अभ्यास था। दुनिया के बहुपक्षीय शांति अभियान की दिशा में बढ़ने या समस्याग्रस्त क्षेत्रों में शांति कायम करने के अभियान के साथ ही इसने इस क्षेत्र में भविष्य में सहयोग का आधार बना दिया है ।

सैन्य सहयोग के तहत पैकोम के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस और भारतीय सैन्य चिकित्सा संगठन के बीच क्षेत्रीय एचआईवी/एड्स रोकथाम के कार्यक्रमों में सहयोग को भी शामिल किया जा रहा है। फरवरी 2004 में सैन्य अनुसंधान के क्षेत्र में समन्वय के लिए किया गया समझौता, सूचना आदान-प्रदान के इस समझौते पर रक्षा मंत्री डोनाल्ड रम्सफेल्ड और भारत के पूर्व रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस ने हस्ताक्षर किए, दोनों देशों के संबंधों में अहम मोड़ है। अब दोनों तंत्र हथियारों से लेकर सियाचिन जैसे इलाकों में बचे रहने की तकनीकों पर अनुसंधान के आदान-प्रदान की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अब सैन्य प्रयोगशालाएं और प्रौद्योगिकियां एक-दूसरे से ''बात'' करेंगी, जो द्विपक्षीय संबंधों में बहुत बड़ी छलांग है।

अमेरिका-भारत संबंध ऐसे चरण में पहुंच गए हैं जहां से भविष्य स्पष्ट दिखाई देता है। यह ऐसा मुकाम है जहां से दोनों सेनाएं आतंकवाद की क्षेत्रीय और वैश्विक चुनौतियों से निबटने, शांति कायम करने तथा मानवीय सहायता की कार्रवाइयां चलाने में मिलकर काम कर सकती हैं, समुद्री क्षेत्रों को वाणिज्य और ऊर्जा संचालन के लिए सुरक्षित बनाए रख सकती हैं, जनसंहार के हथियारों के प्रसार को रोकने की अगुआई कर सकती हैं तथा एशिया में स्थिरता लाने की ताकत बन सकती हैं।

शांति अभियान

2002 : बांग्लादेश में शांति अभियान का बहुपक्षीय अभ्यास।

फरवरी 2003: कंप्यूटर के नवीनतम सिमुलेशन से प्रेरित अमेरिकी-भारतीय सेना के शांति अभियान सीपीएक्स ''शांतिपथ'' का नई दिल्ली के यूनाइटेड सर्विसेज इंस्टीट्यूशन में अभ्यास। अमेरिका-भारत और 11 दूसरे देशों के कुल 150 प्रतिनिधि शरीक। यह अभ्यास प्रतिभागियों को बहुपक्षीय वातावरण में शांति अभियान चलाने की तकनीकें बताने के लिए तैयार किया

गया। इसमें बांग्लादेश, भारत, नेपाल, श्रीलंका और अमेरिका का बटालियन स्टाफ और मैडागास्कर, मॉरीशस, फिजी, मंगोलिया, मलेशिया, थाईलैंड, फिलीपींस और टोंगा के पुलिस कर्मचारी शामिल थे।

शांति अभियान को बढ़ावा

- भारत को अगले पांच साल तक प्रशिक्षण व उपकरणों के लिए ईआईपीसी कोष में 3.6 करोड़ रु. (8 लाख डॉलर) मिले।
- अमेरिका प्रायोजित शांति अभियान के अभ्यास में भारत सह-आयोजक होगा, पैसिफिक आर्मीज़ मैनेजमेंट सेमिनार व एमपीएटी टीई-7 का आयोजन करेगा।

अगस्त 2004: आईडीएस अमेरिका में पैकोम के प्लाटून ऑगमेंटेशन टीम 07 पीकेओ सीपीएक्स श्रृंखलाओं का सह-आयोजक होगा।